Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 3, March - 2023 Publication Date: 31/03/2023

DOIs:10.2018/SS/202303009 --:-- Research Paper / Article / Review

सॉफ्ट पॉवर कूटनीति का भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन

[1] प्रमोद कुमार पांडेय, [2] गुंजन त्रिपाठी

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराज सिंह कॉलेज, सहारनपुर, उ.प्र., भारत
[2]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एल.जे.एन.के. गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर, उ.प्र., भारत
Email – pramodpandey7615@gmail.com

Abstract: *भारत और नेपाल अपनी भौगोलिक निकटता और ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के कारण एक अद्वितीय और जटिल संबंध साझा करते हैं। दोनों देशों के लोगों के बीच मजबूत संबंध और गहरी सांस्कृतिक और भाषाई समानतायें हैं। हालांकि, भारत और नेपाल के संबंध तनाव, गलतफहमी तथा सहयोग की विशेषता से युक्त रहे हैं। भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और विदेशी सहायता और निवेश का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। इसके अतिरिक्त, नेपाल के लोगों के भारत के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध हैं, और लाखों नेपाली भारत में काम करते हैं और रहते हैं। हालांकि, भारत और नेपाल के संबंधों में कई बार तनाव भी आया है। नेपाल ने भारत पर उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है और भारतीय अधिकारियों पर नेपाल में अलगाववादी आंदोलनों का समर्थन करने का आरोप लगाया है। इसके अतिरिक्त, नेपाल इस क्षेत्र में भारत के बढ़ते प्रभाव के बारे में चिंतित रहा है, और अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की मांग की है। एक मजबूत और सकारात्मक संबंध बनाए रखने के लिये निरंतर संवाद, आपसी समझ और एक-दूसरे की संप्रभुता के लिए सम्मान जरूरी है। भारत की सॉफ्ट पॉवर कूटनीति भारत– नेपाल संबंधों को सामान्य बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम है क्योंकि दोनों देशों के संबंध सांस्कृतिक आधार पर सदियों से जुड़े है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी आधिकारिक यात्राओं, संधिओं और समझौतों द्वारा इस कूटनीति को एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। प्रस्तुत पत्र भारत– नेपाल संबंधों को सामान्य करने में सॉफ्ट पॉवर कूटनीति की भूमिका की समीक्षा करता है ।*

Key Words: *सॉफ्ट पॉवर, विदेश नीति, सांस्कृतिक संबंध, पर्यटन, मोदी नीति, संप्रभुता, अहस्तक्षेप ।*

1. प्रस्तावना :

भारत-नेपाल संबंधों का स्वरूप केवल राजनीतिक आधार पर नहीं देखा जाना चाहिये, क्योंकि दोनों देशों के बीच भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक एकरूपता संबंधों में दृढ़ता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दोनों देशों की मुक्त सीमायें, गहन वैयक्तिक संपर्क, आपसी भाईचारा और संस्कृति इसकी अपनी अलग पहचान है। नेपाल की 1850 किमी. से अधिक की सीमा, दक्षिण पूर्व एवं पश्चिम की तरफ से भारत के 5 प्रांतों- सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड से मिलती है। इसके साथ ही इसकी उत्तरी सीमा चीन के तिब्बत प्रांत से मिलती है। नेपाल, भारत तथा चीन के बीच एक 'बफर स्टेट' की तरह है। अतः भारत के लिए नेपाल एक रणनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण पड़ोसी बन जाता है। इस कारण नेपाल, भारतीय विदेश नीति में हमेशा से ही विशेष महत्व रखता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने भारतीय विदेश नीति में बदलाव करते हुये सॉफ्ट पॉवर कूटनीति को नवीन स्वरूप में अधिक महत्व दिया, जिससे दोनों देशों के संबंधों को मधुर करने तथा भारत की नेपाल में 'बिग ब्रदर' के रूप में स्थापित तथाकथित छवि को भी तोड़ने में मदद मिली है। प्रधानमंत्री द्वारा नेपाली संसद को संबोधित करते हुये साफ शब्दों में कहा गया कि नेपाल एक संप्रभु राष्ट्र है और उसके मामलों में हस्तक्षेप करना हमारा काम नहीं है, बल्कि नेपाल ने जो रास्ता (लोकतंत्र) चुना है उसमे हम उनको सहयोग प्रदान करेंगे। यह शोध आलेख, भारतीय सॉफ्ट पॉवर कूटनीति का भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव का मूल्यांकन करता है। इस अध्ययन का एक उद्देश्य यह भी है कि किस प्रकार भारतीय कूटनीति अपने हितों को सुरक्षित करते हेतु नेपाल के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास कर रही है और दोनों देशों के स्तर पर व्याप्त चुनौतियों का सामना करते हुये भारत की छवि को नेपाली जनमानस में एक अच्छे मित्र और भरोसेनमंद सहयोगी के रूप में प्रतिस्थापित करने का कार्य कर रही है।

वर्ष 1947 में भारत एक स्वतंत्र देश बना और स्वतंत्र विदेश नीति की शुरुआत हुई। भारतीय विदेश नीति भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, बुद्ध और गांधी दर्शन, स्वतंत्रता आंदोलन के उच्च आदर्शों तथा वसुधैव कुटुंबकम की भावना के आधार पर विश्व शांति हेतु गुटनिरपेक्षता के रास्ते पर अग्रसर हुई। नि:शस्त्रीकरण की उपयुक्तता, उपनिवेशवाद तथा नस्लवाद जैसी विचारधाराओं का घोर विरोध, लोकतंत्र का कट्टर समर्थन, नव स्वत्रन्त्र एशियाई-अफ्रीकी देशों की एकता तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सिद्धांतों और नियमों के प्रति आस्था भारतीय विदेश नीति के शुरूआती आधारस्तंभ रहें हैं। (चक्रवर्ती, 2014) नेहरू युग से लेकर मोदी काल तक भारत की विदेश नीति का निरंतर विकास हुआ है। भारतीय विदेश नीति ने अपने शुरुआती दौर से आदर्शवादी सिद्धांतों के साथ लचीलेपन और यथार्थवाद का सुंदर समन्वय कर रखा है, जिसमें राष्ट्रीय हितों को प्रमुखता से साधा जाता रहा है। भारतीय विदेश नीति में सॉफ्ट पॉवर कूटनीति को हमेशा से विशेष स्थान प्राप्त रहा है। पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में पंडित नेहरू का अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण ही छाया रहा जबकि श्रीमती गांधी ने तथा जनता सरकार ने संबंधों को मधुर करने हेतु क्षेत्रीय दृष्टिकोण को अपनाया और पड़ोसी देशों के साथ विशेष संबंधों को प्राथमिकता देते हुये सॉफ्ट पॉवर कूटनीति को प्रारम्भिक रूप में महत्व प्रदान

किया। प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अपनी विदेश नीति में दक्षिण एशिया को विशेष महत्व दिया, सार्क के गठन में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रधानमंत्री राव ने दक्षिण एशिया के अपने पड़ोसी देशों के बीच मधुर संबंधों हेतु आर्थिक संबंधों को बढ़ाने की वकालत की, जिसके लिए वह अप्रैल, 1993 में सार्क के ढाका शिखर सम्मेलन में प्रतिभाग करने भी पहुँचे और उन्हीं के प्रयासों से पहली बार सार्क ने वर्ष 1995 में 'दक्षिण एशियाई तरजीह व्यापार समझौता')South Asian Preference Trade Agreement) किया। इन्होंने विदेश नीति में नैतिकता और मूल्य के स्थान पर अपने राष्ट्रीय हितों को साधने हेतु आर्थिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान दिया। (खन्ना, 1997)

प्रधानमंत्री गुजराल ने पड़ोसी देशों के बीच बेहतर रिश्तो हेतु 'गुजराल डॉक्ट्रिन' शुरू की और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु 'दक्षिण एशियाई आर्थिक समुदाय' के गठन का प्रस्ताव किया। प्रधानमंत्री वाजपेयी ने भी अपनी विदेश नीति में पड़ोसी देशों के बीच संबंधों में आर्थिक एजेंडे को सर्वोपरि स्थान दिया। साथ ही, गरीबी उन्मूलन हेतु 10 करोड़ डॉलर की राशि देने की पेशकश की। (पीटीआई, 2013) पड़ोसी देशों के साथ परिवहन व्यवस्था (रेल, सड़क तथा वायुयान) मजबूत करने पर ध्यान दिया। पड़ोसी देशों के साथ वैदेशिक नीति में सांस्कृतिक कूटनीति पर जोर दिया गया, जिसमें साझी विरासत के आधार पर संबंधों को प्रमुखता देने की शुरुआत हुई। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूरे होने वर्ष 2007 में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में साझा समारोह आयोजित किया गया। (पीआईबी, 2007) मनमोहन सिंह सरकार ने विदेश नीति में आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया, तथा पड़ोसी देशों के साथ क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग, गरीबी उन्मूलन तथा ऊर्जा सुरक्षा हेतु ठोस उपायों को अपनाने की आवश्यकता को महत्व दिया। 2007 में सार्क के 14वें शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली में भारत द्वारा एकतरफा घोषणा करते हुए दक्षिण एशियाई अल्पविकसित देशों के लिए व्यापार में रियायत देते हुए भारत द्वारा शुल्क-मुक्त व्यवस्था की घोषणा की गयी। (फड़िया, 2012)

मई, 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में ही सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित करके यह संदेश दिया कि नई सरकार, सभी पड़ोसी देशों के साथ शांति और मित्रता को बढ़ावा देना चाहती है। किसी भी सरकार के लिए अपने राष्ट्रीय हितों को प्रभावी और निर्बाध रूप से बढ़ावा देने हेतु पड़ोसी देशों के साथ शांति और स्थिरता बनाये रखना जरूरी है। मोदी सरकार ने, इन उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु 2014 के बाद से ही सॉफ्ट पावर कूटनीति को भारतीय विदेश नीति में प्रमुखता से शामिल करना शुरू किया। नेपाल के प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति 'पड़ोस पहले' और 'सबका साथ, सबका विकास' के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका अर्थ है 'सभी के लिए समावेशी विकास'। (ऐड्मिन, 2018) मोदी ने भारत-नेपाल संबंधों के महत्व पर जोर दिया है और दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए हैं। नेपाल के प्रति मोदी सरकार की कुछ प्रमुख नीतिगत पहलों में शामिल हैं:

- उच्च स्तरीय यात्राएं: मोदी सरकार ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए 2018 में मोदी की अपनी नेपाल यात्रा सहित नेपाल की कई उच्च स्तरीय यात्राएं की हैं।
- कनेक्टिविटी: मोदी सरकार ने बीरगंज-रक्सौल में एकीकृत चेक पोस्ट और दार्चुला में नेपाल-भारत मैत्री पुल के निर्माण जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के माध्यम से भारत और नेपाल के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है।
- व्यापार और निवेश: मोदी सरकार दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। 2019 में, भारत और नेपाल ने बिहार के मोतिहारी से नेपाल के अमलेखगंज तक पेट्रोलियम पाइपलाइन बनाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे नेपाल की ऊर्जा सुरक्षा बढ़ने की उम्मीद है।
- विकास सहायता: भारत स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में नेपाल को विकास सहायता प्रदान कर रहा है। 2018 में, भारत ने नेपाल में नेपाल-भारत मैत्री पॉलिटेक्निक संस्थान के लिए एक नए भवन के निर्माण के लिए 160 मिलियन नेपाली रूपये की अनुदान सहायता की घोषणा की।
- सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध: मोदी सरकार ने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंधों के महत्व पर जोर दिया है। 2018 में, भारत और नेपाल ने दोनों देशों के बीच धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रामायण सर्किट लॉन्च किया। कुल मिलाकर नेपाल के प्रति मोदी की नीति द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने और नेपाली क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित दिखायी देती है।

भारत और नेपाल संबंधों के मध्य भारत-विरोधवाद एक नया आयाम लेने की कोशिश कर रहा है। यह विचार मुख्यतः काठमांडू घाटी में तेजी से फैला है। यह कई दृष्टिकोणों के साथ एक जटिल मुद्दा है और इसका व्यापक सामान्यीकरण करना अनुचित होगा। लेकिन फिर भी राजशाही के पतन के बाद अतिवादी वामपंथ तथा कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता- सरंचना में प्रमुख भागीदार बनी हुई है, जिससे नेपाल में चीन का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है और भारत विरोधी भावनायें भी बलवती हो रही है। भारत और नेपाल के बीच लंबे समय से साझा सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक संबंध रहे हैं। हालांकि, क्षेत्रीय विवादों, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, असुरक्षा की भावना और राजनीतिक मतभेदों सहित विभिन्न कारकों के कारण हाल के वर्षों में संबंध तनावपूर्ण रहे हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जहां कुछ नेपाली नागरिकों ने सीमा पार व्यापार, सीमा विवाद और सांस्कृतिक प्रभुत्व जैसे मुद्दों का हवाला देते हुए भारत विरोधी भावनाओं को व्यक्त किया है। इसी तरह, कुछ भारतीय नागरिकों ने भी सीमा घुसपैठ और अवैध आव्रजन जैसे मुद्दों का हवाला देते हुए नेपाल विरोधी भावनाएं व्यक्त की हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ऐसी भावनाएं दोनों देशों में अधिकांश लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं। भारत और नेपाल में सरकारें और नागरिक समाज आपसी मतभेदों को आपसी विमर्श के द्वारा सुलझाते रहे है तथा संबंधों को बेहतर बनाने और तनाव पैदा करने वाले अंतर्निहित मुद्दों को समाप्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। जिससे दोनों देशों की आपसी सद्भावना बनी रहे। हाल ही में कुछ नेपाली राजनीतिक दल भी भारत- विरोध की भावना को बल दे रहे हैं। पूर्व नेपाली प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली ने तो भारत- नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों को प्रभावित करते हुये नये सांस्कृतिक प्रतिमान भी गढ़ने शुरू कर दिये। ओली ने कहा कि 'अयोध्या बिहार की सीमा से सटे शहर बीरगंज के पश्चिम में एक क्षेत्र है। हमें सांस्कृतिक रूप से धोखा दिया गया है, क्योंकि भारत ने तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है। सीता का किसी भारतीय राजकुमार से शादी नहीं हुआ था'। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत के उत्तर–प्रदेश प्रांत का अयोध्या जिला बाद का निर्माण था, न कि राम का वास्तविक प्राचीन साम्राज्य। (डेस्क, 2020)

दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक, आर्थिक और लोगों से लोगों के बीच बेहतर संबंध हैं, लेकिन दोनों देशों के बीच सीमा विवाद, जल संसाधन और आर्थिक सहयोग सहित विभिन्न मुद्दों पर कभी-कभी तनाव और विवादों से हालात भी बनते रहे हैं। हाल के वर्षों में, नेपाल के नये संविधान पर विवाद, जिसे भारत के प्रतिकूल माना गया था और चीन के साथ नेपाल की बढ़ती निकटता, आर्थिक नाकेबंदी सहित कई मुद्दों के कारण नेपाल-भारत संबंध तनावपूर्ण रहे हैं। 2020 में, नेपाली सरकार ने एक नया राजनीतिक मानचित्र जारी किया जिसमें विवादित क्षेत्र को नेपाल के हिस्से के रूप में दिखाया गया था, जिसकी भारत ने आलोचना की। अगर नेपाल और भारत के बीच गलतफहमियां हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें रचनात्मक बातचीत और आपसी समझ के माध्यम से हल किया जाये। दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों को मजबूत किये जाने की जरूरत है। भारत द्वारा नेपाल के आंतरिक मामलों में सार्वजनिक रूप से सलाह देना तथा यह आशा करना कि वह इसे अमल में भी लाये, यह ठीक नहीं है। नेपाल एक संप्रभु और स्वतंत्र देश है अतः उसकी संप्रभुता का सम्मान करते हुये उसके आंतरिक मामलों से हमें एक निश्चित दूरी बनाये रखने की आवश्यकता है।

सॉफ्ट पावर एक देश की सैन्य या राजनीतिक ताकत के बजाय सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक साधनों तथा राजनीतिक मूल्यों के माध्यम से अन्य देशों को प्रभावित करने की क्षमता को संदर्भित करता है। भारत-नेपाल संबंधों के संदर्भ में, नेपाल के साथ अपने सांस्कृतिक, भाषाई और ऐतिहासिक संबंधों के कारण भारत के पास महत्वपूर्ण सॉफ्ट पॉवर है। भारत और नेपाल एक लंबे समय से संबंध साझा करते हैं, जो उनके सामान्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों की नींव पर बनाया गया है। सहायता राशि और सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से नेपाल के आर्थिक और सामाजिक विकास में भारत का बड़ा योगदान रहा है। भारत धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देकर नेपाल के पर्यटन उद्योग को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। इसके अतिरिक्त, भारत में पढ़ने वाले नेपाली छात्रों की महत्वपूर्ण संख्या और नेपाल में भारतीय फिल्मों, संगीत और टेलीविजन शो की लोकप्रियता में भी भारत की सॉफ्ट पावर स्पष्ट रूप से दिखती है। हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार ने भी नेपाल में भारत की सॉफ्ट पावर में योगदान दिया है। हालांकि, ऐसे उदाहरण भी हैं, जहां भारत द्वारा अपनी सॉफ्ट पावर के प्रयोग ने भारत-नेपाल संबंधों में तनाव पैदा किया है। उदाहरण के लिए, नेपाल भारत के सांस्कृतिक और भाषाई प्रभाव से हमेशा सावधान रहा है, जिसे वह भारत द्वारा नेपाली संस्कृति और पहचान को कमजोर करने के प्रयास के रूप में देखता है। नेपाल में भारतीय मुद्रा के उपयोग और भारतीय वित्त पोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण पर भी असहमति रही है। (अंकि, 2022)

हाल के वर्षों में, भारत ने नेपाल के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए अपनी सॉफ्ट पावर का इस्तेमाल किया है। भारत-नेपाल संबंधों में भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति को कुछ उदाहरणों के साथ समझने का प्रयास करते हैं:-

- **सांस्कृतिक संबंध:** भारत और नेपाल भाषा, धर्म और परंपराओं सहित एक साझा सांस्कृतिक विरासत साझा करते हैं। भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम और बॉलीवुड फिल्में, संगीत समारोह और त्यौहार जैसे कार्यक्रम नेपाल में बहुत लोकप्रिय हैं, जिसने दोनों देशों के बीच लोगों के आदान-प्रदान और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में मदद की है।
- **धार्मिक संबंध:** भारत और नेपाल एक गहरे आध्यात्मिक बंधन को साझा करते हैं, जिसमें नेपाल भगवान बुद्ध का जन्मस्थान है और कई महत्वपूर्ण हिंदू और बौद्ध तीर्थ स्थलों का घर है। भारत ने इन स्थलों के विकास और बहाली का समर्थन किया है, जिससे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों को मजबूत करने में मदद मिली है।
- **शैक्षिक आदान-प्रदान:** भारत नेपाली छात्रों को भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान कर रहा है। इस पहल ने दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क को मजबूत करने में मदद की है और नेपाली छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान की है।
- **आर्थिक सहायता:** भारत नेपाल को उसकी विकासात्मक परियोजनाओं हेतु मदद करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है। इस सहायता में बुनियादी ढांचे का विकास, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा शामिल है।
- **पर्यटन:** भारत नेपाल में पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है, जिसने नेपाली अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में मदद की है और भारतीय पर्यटकों को नेपाली संस्कृति और आतिथ्य का अनुभव करने का अवसर प्रदान किया है।
- **भाषा:** हिंदी, जो भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है, नेपाल में व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है। भारत नेपाली स्कूलों में हिंदी के शिक्षण को बढ़ावा दे रहा है, जिससे दोनों देशों के बीच भाषाई संबंधों को मजबूत करने में मदद मिली है।
- **लोगों से लोगों के बीच संपर्क:** भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पर्यटन और शैक्षिक आदान-प्रदान जैसी पहलों के माध्यम से दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क को प्रोत्साहित करता रहा है। इससे भारत और नेपाल के लोगों के बीच आपसी विश्वास और समझ बनाने में मदद मिली है।
- **सैन्य सहयोग:** भारत ने नेपाली सेना को सैन्य प्रशिक्षण और उपकरण प्रदान किए हैं। इस सहयोग ने सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए नेपाल की क्षमता को बढ़ाने में मदद की है और दोनों देशों के बीच सैन्य संबंधों को मजबूत किया है।

भारत की सॉफ्ट पावर पहल ने भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को गहरा करने में मदद की है। इन पहलों ने दोनों देशों के बीच एक मजबूत और स्थायी संबंध के विकास में योगदान दिया है। उल्लिखित उदाहरणों के अलावा, कई अन्य तरीके हैं जिनमें भारत ने नेपाल के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए अपनी सॉफ्ट पावर का उपयोग किया है। प्रधानमंत्री देउबा ने ग्लासगो में सीओपी-26)COP-26) के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री मोदी से भी मुलाकात की, जहां उन्होंने मोदी को नेपाल आने का न्योता भी दिया। जनवरी 2021 में, विभिन्न द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए नेपाल-भारत संयुक्त आयोग (जेसी) की छठी बैठक आयोजित की गई। कोविड-19 टीकों, सीमा और सीमा प्रबंधन, कनेक्टिविटी, व्यापार, संस्कृति और शिक्षा जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक के बाद भारत ने नेपाल को कोविशील्ड वैक्सीन की 10 लाख खुराकें शुरुआती दौर में प्रदान कीं। (सिंह अ. , 2022) नेपाल में भारत की सॉफ्ट पावर पहल दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने में सहायक रही है। सांस्कृतिक समझ, शैक्षिक आदान-प्रदान, आर्थिक सहायता, सैन्य सहयोग, धार्मिक संबंधों, पर्यटन, भाषा और लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देकर, भारत ने भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को गहरा करने का कार्य किया है। सॉफ्ट पॉवर कूटनीति ने दोनों देशों के बीच एक मजबूत और स्थायी संबंध के विकास में योगदान दिया है, जिसे आने वाले वर्षों में भी बढ़ने की संभावना है।

भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी अब तक पाँच बार नेपाल की आधिकारिक यात्रा कर चुके हैं। पहली बार नवंबर, 2014 में भारत का प्रधान मंत्री बनने के बाद यह मोदी की पहली नेपाल यात्रा थी। यह 17 वर्षों के अंतराल के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान उन्होंने तत्कालीन नेपाली प्रधानमंत्री सुशील कोइराला से मुलाकात की और व्यापार, निवेश, कनेक्टिविटी और सुरक्षा सहित द्विपक्षीय संबंधों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 25 से 27 नवंबर तक काठमांडू गए थे। यह अगस्त, 2014 में द्विपक्षीय यात्रा के बाद मोदी की काठमांडू की यह दूसरी यात्रा थी। उस यात्रा के दौरान, मोदी ने सामाजिक, राजनीतिक और जातीय विभाजन से ऊपर उठकर नेपाली समुदाय के लगभग सभी वर्गों के साथ व्यक्तिगत संबंधों का एक स्तर स्थापित किया था, जो भारत-नेपाल संबंधों में पहले कभी नहीं देखा गया था। इस यात्रा के दौरान भारत - नेपाल के बीच यात्रियों की सुचारु आवाजाही के लिए निर्धारित मार्गों, ट्रिपों और समय - सारणी के अनुसार नियमित बस सेवा शुरु करने के लिए द्विपक्षीय मोटर व्हीकल समझौता हुआ। एक्जिम बैंक से नेपाल सरकार को एक अरब अमरीका डॉलर तक का ऋण मिल सकेगा। इस राशि का उपयोग जलविद्युत, सिंचाई और बुनियादी-ढ़ांचा विकास परियोजना के लिए किया जा सकेगा। इस बात की घोषणा प्रधानमंत्री ने अगस्त, 2014 की अपनी नेपाल यात्रा के दौरान की थी। इस घोषणा से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधो के और मजबूत होने और व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि होने की उम्मीद है। काठमांडू –वाराणसी, जनकपुर-अयोध्या और लुम्बिनी-बोधगया के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए इन्हें सिस्टर सिटी के रुप में जोड़ने का प्रस्ताव किया गया है। प्रधानमंत्री ने अपनी यात्रा के दौरान नेपाली सेना को ध्रुव एडवांस्ड लाइट हेलिकॉप्टर मार्क- तीन सौंपा। प्रधानमंत्री ने अपनी यात्रा के दौरान घोषणा की कि भारत सरकार नेपाल में 500 और 1000 के भारतीय नोटों पर लगे प्रतिबंध को हटाने पर विचार कर रही हैं। यह प्रतिबंध वहां मई, 2000 से लागू है। नेपाली सरकार भी लगातार इस प्रति बंध को हटाने की मांग करती रही है। इस प्रतिबंध के हटने से मुद्रा सुविधाओं में इजाफा होगा साथ ही लोगों की सीमापार अबाध आवाजाही और पर्यटन बढ़ावा मिलेगा । (ऐड्मिन 2. , 2014)

मई, 2018 में मोदी जी नेपाल की तीसरी आधिकारिक यात्रा पर गये। इस यात्रा का उद्देश्य भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करना था। यह यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण थी कि पिछले कुछ वर्षों में भारत – नेपाल संबंध कठिनाई से गुजरे, विशेष रूप से नेपाल की आर्थिक नाकेबंदी तथा संविधान के कुछ प्रावधानों को लेकर मतभेद तीव्र रहे थे। इस यात्रा के दौरान उन्होंने नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली से मुलाकात की और कनेक्टिविटी, व्यापार और पर्यटन सहित आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने जनकपुर और मुक्तिनाथ का भी दौरा किया। साथ ही, काठमांडू और जनकपुर में नागरिक अभिनंदन समारोह में भी भाग लिया। दोनों देशों और लोगों के बीच घनिष्ठ धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत करने की दृष्टि से, दोनों प्रधानमंत्रियों ने अयोध्या और महाकाव्य रामायण से जुड़े अन्य स्थलों के साथ सीता की जन्मभूमि जनकपुर को जोड़ने वाले नेपाल-भारत रामायण सर्किट का शुभारंभ किया। जनकपुर में, दोनों प्रधानमंत्रियों ने जनकपुर और अयोध्या के बीच सीधी बस सेवा का उद्घाटन किया। (सरकार, 2018)

अगस्त, 2018 में मोदी जी नेपाल की चौथी बार आधिकारिक यात्रा पर गये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चौथे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए काठमांडू पहुंचे, जो क्षेत्रीय संपर्कऔर व्यापार को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहा। 31 अगस्त, 2018 को पीएम मोदी और प्रधानमंत्री केपी ओली ने काठमांडू में नेपाल-भारत मैत्री पशुपति धर्मशाला का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि यह धर्मशाला तीर्थयात्रियों के लिए केवल एक आराम घर नहीं होगा, इससे भारत और नेपाल के बीच संबंध और मजबूत होंगे। नेपाल सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी की कविताओं का नेपाली भाषा में अनुवाद करने का फैसला किया। (ऐड्मिन 2. , 2018)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय शेर बहादुर देउबा के निमंत्रण पर 16 मई, 2022 को बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर नेपाल के लुंबिनी की आधिकारिक यात्रा की। प्रधानमंत्री के रूप में, श्री नरेन्द्र मोदी की यह नेपाल की पांचवीं और लुंबिनी की पहली यात्रा थी। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रधानमंत्री श्री देउबा के साथ नई दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) से संबंधित लुंबिनी स्थित एक भूखंड पर भारत अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति एवं विरासत केंद्र के निर्माण हेतु "शिलान्यास" समारोह में भाग लिया। यह भूखंड लुंबिनी डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा आईबीसी को नवंबर 2021 में आवंटित किया गया था। दोनों प्रधानमंत्रियों ने 2566वीं बुद्ध जयंती समारोह को मनाने के लिए नेपाल सरकार के तत्वावधान में लुंबिनी डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में भाग लिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी की नेपाल में लुंबिनी की यह यात्रा 1 से 3 अप्रैल 2022 के दौरान प्रधानमंत्री श्री देउबा की दिल्ली और वाराणसी की सफल यात्रा के बाद हुई है। इस यात्रा ने दोनों देशों के बीच बहुआयामी साझेदारी विकसित करने के साथ ही शिक्षा, संस्कृति, ऊर्जा तथा दोनों देशों के लोगों से लोगों के बीच आदान-प्रदान जैसे प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की लुंबिनी यात्रा भारत और नेपाल के बीच गहरे एवं समृद्ध सभ्यतागत जुड़ाव को सुदृढ़ करने तथा उसे प्रोत्साहित करने में दोनों ओर के लोगों के योगदान पर भी जोर देती है। (ऐड्मिन 2. , 2022)

नेपाल, भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी है और दोनों देश सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों का एक लंबा इतिहास साझा करते हैं। भारत के लिए नेपाल के महत्व को कई तरीकों से देखा जा सकता है। नेपाल भारत के साथ अपनी सीमा साझा करता है, जो इसे भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ोसी बनाता है। दोनों देशों के बीच निकटता के कारण घनिष्ठ सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं। नेपाल की स्थिरता और सुरक्षा भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अस्थिर नेपाल शरणार्थी संकट का कारण बन सकता है, जिसका सीधा असर भारत की सुरक्षा पर पड़ सकता है। नेपाल आतंकवाद और सीमा पार अपराधों के खिलाफ लड़ाई में भी एक महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। नेपाल भारत के लिए रणनीतिक महत्व रखता है क्योंकि यह भारत और चीन के बीच एक बफर जोन के रूप में कार्य करता है। नेपाल में भारत का रणनीतिक हित तभी सुनिश्चित किया जा सकता है जब वह भारत के प्रति स्थिर और मैत्रीपूर्ण बना रहे। नेपाल में जल विद्युत उत्पादन की एक बड़ी क्षमता है, और भारत बिजली का एक प्रमुख आयातक है। भारत, नेपाल के जल विद्युत क्षेत्र में निवेश कर रहा है और अपने बिजली बुनियादी ढांचे को विकसित करने के नेपाल के प्रयासों का समर्थन करते हुये उसकी सहायता भी कर रहा है। भारत, नेपाल को सुरक्षा सहायता प्रदान करता रहा है और दोनों देश सुरक्षा से संबंधित कई मामलों में सहयोग कर रहे हैं। अंत में, नेपाल अपने रणनीतिक स्थान, आर्थिक संबंधों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सुरक्षा हितों के कारण भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ोसी है। दोनों देश अपने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में काम कर रहे हैं।

इस प्रकार भारत की सॉफ्ट पावर नीति का पिछले कुछ वर्षों में नेपाल के साथ उसके संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इसने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, शैक्षिक, आर्थिक और धार्मिक संबंधों को मजबूत करने में मदद की है, और इसने भारत और नेपाल के लोगों के बीच

आपसी समझ और दोस्ती की भावना को और गहरी करने में योगदान दिया है। सॉफ्ट पावर एक देश की सैन्य या आर्थिक साधनों के बजाय अपनी संस्कृति, मूल्यों और नीतियों के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता को संदर्भित करता है। भारत के मामले में, सॉफ्ट पावर इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, बॉलीवुड फिल्मों, क्रिकेट, योग और अन्य चीजों के साथ भारतीय व्यंजनों की लोकप्रियता से भी लिया जाता है। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में भारत - नेपाल संबंधों में इस कूटनीति को तेजी से लागू करने का प्रयास किया गया। प्रधानमंत्री ने स्वयं नेपाल के पाँच आधिकारिक दौरे करके इस कूटनीति को सफल बनाया है। भारत और नेपाल के संबंध सदियों से लोगों से लोगों के बीच संबंध पर आधारित है, लेकिन सरकारों के स्तर पर यह उतार- चढ़ाव से भरा हुआ दिखता है। कुल मिलाकर, भारत की सॉफ्ट पावर कूटनीति भारत-नेपाल संबंधों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण कारक रही है, भारत के लिए नेपाल की चिंताओं के प्रति सचेत रहना और पारस्परिक सम्मान और सहयोग पर आधारित संबंधों की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची:

1. पीएम नरेंद्र मोदी एड्रेस्सेस नेपाल कोंस्टीटूएंट असेंबली . (2014, 08 03). Retrieved 09 24, 2022, from पीएमओ इंडिया यूट्यूब: https://www.youtube.com/watch?v=RPxSS9K_MkM
2. *चाइना एनकरेज नेपाल टू लिव लक्जरियस्ली विथ इट ऑन लोन, अलार्म बेल फॉर अनादर डेब्ट ट्रैप* . (2022, 08 10). Retrieved 09 18, 2022, from एएनआई(ANI) - साउथ एशिया लीडिंग मल्टीमीडिया न्यूज़ एजेंसी: https://www.aninews.in/news/world/asia/china-encourages-nepal-to-live-luxuriously-with-it-on-loan-alarm-bell-for-another-debt-trap20220810181750/
3. mea. (2014). *https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Nepal_July_2014_.pdf.*
4. अंकि, फ. (2022, May 16). *Modi's visit to Nepal aimed at exerting soft power to calm angry nerves: Chinese experts*. Retrieved March 7, 2023, from Global Times: https://www.globaltimes.cn/page/202205/1265797.shtml?id=11
5. एडमिन. (2014, 08 05). *प्राइम मिनिस्टर श्री नरेंद्र मोदी एन्थ्रालड नेपाल बाई हिज विजिट*. Retrieved 09 19, 2022, from नरेंद्र मोदी: https://www.narendramodi.in/prime-minister-shri-narendra-modi-enthralled-nepal-by-his-visit-6427
6. एमईए. (2014). *https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Nepal_July_2014_.pdf.*
7. ऐड्मिन. (2018 , 05 11). *Nepal is at the forefront of India's 'Neighbourhood First' policy: PM Modi in Janakpur*. Retrieved 3 3, 2023, from Narendra Modi: https://www.narendramodi.in/nepal-is-at-the-forefront-of-india-s-%E2%80%98neighbourhood-first-policy-pm-modi-in-janakpur-540044
8. ऐड्मिन, 2. (2014, November 27). *Outcomes during the visit of Prime Minister to Nepal (November 25-27, 2014)*. Retrieved March 7, 2023, from https://www.narendramodi.in/: https://www.narendramodi.in/outcomes-during-the-visit-of-prime-minister-to-nepal-november-25-27-2014-6943
9. ऐड्मिन, 2. (2018, August 31). *Nepal-India Maitri Pashupati Dharmshala will further enhance ties between our countries: PM Modi*. Retrieved March 5, 2023, from https://www.narendramodi.in/: https://www.narendramodi.in/text-of-pm-s-address-at-the-inauguration-of-pashupatinath-dharmashala-in-kathmandu--541316
10. ऐड्मिन, 2. (2022, May 16). *Visit of Prime Minister to Lumbini, Nepal (May 16, 2022)*. Retrieved March 6, 2023, from https://www.narendramodi.in/: https://www.narendramodi.in/-may-16-2022-visit-of-prime-minister-to-lumbini-nepal--561836
11. खन्ना, व. ए. (1997). *फॉरेन पॉलिसी आफ इंडिया.* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.
12. गार्डनर, ड. (2014, 08 16). *पावर प्ले: चाइना एंड इंडिया जॉस्टल फॉर इन्फ्लुएंस इन नेपाल* . Retrieved 09 17, 2022, from Post Magazines : https://www.scmp.com/magazines/post-magazine/article/1572819/caught-middle?module=perpetual_scroll_0&pgtype=article&campaign=1572819
13. गिरधारी दहल. (2018). फॉरेन रिलेशन ऑफ़ नेपाल विथ चाइना एंड इंडिया . *Journal of Political Science, Volume XVIII*, 46-61.
14. गोपाल शर्मा. (03 08 2014). *इंडिया ज मोदी ऑफर्स नेपाल $1 बिलियन लोन इन रीजनल डिप्लोमेसी पुश* . रायटर्स : https://www.reuters.com/article/india-nepal-idUSL4N0Q906F20140803 से, 19 09 2022 को पुनर्प्राप्त
15. गौतम, न. औ. (दिसंबर, 2021). डेमॉनेटिज़ेशन इन इंडिया एंड इट्स इम्पैक्ट इन नेपाल. *स्कॉलर'स जर्नल*, 228-239.
16. चतुर्वेदी, श. क. (1983). *भारत-नेपाल संबंध.* दिल्ली: बी.आर. पब्लिकेशन कारपोरेशन.
17. चौधरी, द. र. (2022, 03 30). *चाइना'ज एगोनी: स्लो पेस ऑफ़ बीआरआई प्रोजेक्ट इन नेपाल* . Retrieved 09 18, 2022, from द इकोनॉमिक टाइम्स : https://economictimes.indiatimes.com/news/international/world-news/chinas-agony-slow-pace-of-bri-projects-in-nepal/articleshow/90535296.cms?from=mdr

18. चौधरी, द. र. (2022, मार्च 31). *द इकोनॉमिक टाइम्स.* Retrieved सितंबर 09, 2022, from https://economictimes.indiatimes.com/news/india/indias-enduring-development-partnership-with-nepal/articleshow/90558342.
19. डेस्क, ए. व. (2020, July 14). *PM Oli's remarks not meant to debase Ayodhya's significance, cultural value: Nepal Foreign Ministry*. Retrieved 3 6, 2023, from The Indian Express: https://indianexpress.com/article/world/nepal-issues-statement-after-pm-olis-remark-on-lord-ram-6505658/
20. नायक, स. (अप्रैल, 2020). इंडिया एंड नेपाल'स कालापानी बॉर्डर डिस्प्यूट: ऐन एक्सप्लेनेर. *ओआरएफ इश्यू ब्रीफ*(356), 1-20.
21. पंत, व. प. (1970). *प्रॉब्लम इन फिस्कल एंड मॉनेटरी पॉलिसी: ए केस स्टडी आफ नेपाल.* नई दिल्ली: विकास पब्लिकेशन .
22. पी.आर. चक्रवर्ती. (2014). India's Foreign Policy in the Neighbourhood. *Indian Foreign Affairs Journal, 9(2), 142–157.http://www.jstor.org/stable/45341924*.
23. पीआईबी. (2007, may 04). *India Celebrates 150th Year of its First War of Independence.* Retrieved february 10, 2023, from pib.gov.in: https://pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=27529
24. पीटीआई. (2013, february 06). *Let's trade, trust will follow: PM.* Retrieved february 10, 2023, from business-standard: https://www.business-standard.com/article/economy-policy/let-s-trade-trust-will-follow-pm-104010501055_1.html
25. फड़िया, ब. (2012). *अंतरराष्ट्रीय संबंध.* आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन.
26. बराल, भ. न. (2019). नेपाल-चाइना-इंडिया: प्रॉस्पेक्टस एंड चैलेंजेज ऑफ़ ट्राईलैटरेलिज्म . *Journal of Political Science, Volume XIX*, 1-20.
27. भट्टाचार्य, ज. प. (1970). *इंडिया एंड पॉलिटिक्स ऑफ मॉडर्न नेपाल.* कोलकाता: मिनर्वा एसोसिएट्स.
28. भसीन, ए. ए. (1970). *डाक्यूमेंट्स ऑन नेपाल रिलेशंस विद इंडिया एंड चाइना.* नई दिल्ली: एकेडमिक बुक .
29. भीम नाथ बराल. (2019). NEPAL-CHINA- INDIA: PROSPECTS AND CHALLENGES OF TRILATERALISM. *Journal of Political Science, Volume XIX*, 1-20.
30. मिश्रा, ओ. ब. (2016). सॉफ्ट पॉवर कंटेस्टेशन बिटवीन इंडिया एंड चाइना इन साउथ एशिया. *Indian Foreign Affairs Journal Vol. 11, No. 2 april - june* , 139-152.
31. मोफा. (n.d.). *https://mofa.gov.np/*. Retrieved 09 11, 2022, from Nepal-China Relations: https://mofa.gov.np/nepal-china-relations/#:~:text=The%20two%20countries%20formalized%20their,respect%20for%20each%20other's%20sensitivities.
32. यी, व. (2022, 03 26). *Wang Yi Talks about China's "Three Supports" for Nepal*. Retrieved 09 17, 2022, from Ministry of Foreign Affairs of the People's Republic of China: https://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjb_663304/wjbz_663308/activities_663312/202203/t20220327_10656328.html
33. राय, र. (2021). *काठमांडू डाइलेमा रीसेटिंग इंडिया - नेपाल टाइस* . गुरुग्राम: विंटेज पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया.
34. रेग्मी, ड. (1952). *अन्सिएंट एंड मिडुअल नेपाल.* काठमांडू: रत्ना पुस्तक भंडार.
35. वेले, ड. (2022, 08 25). *नेपाल: व्हाट हैप्पेंड टू चाइना'ज 'बेल्ट एंड रोड' प्रोजेक्ट?* Retrieved 09 19, 2022, from फ्रंटलाइन इंडिया'ज नेशनल मैगज़ीन: https://frontline.thehindu.com/dispatches/nepal-what-happened-to-chinas-belt-and-road-projects/article65466849.ece
36. सरकार, न. (2018, May 12). *Nepal-India Joint Statement during the State Visit of Prime Minister of India to Nepal*. Retrieved March 7, 2023, from https://mofa.gov.np/: https://mofa.gov.np/nepal-india-joint-statement-during-the-state-visit-of-prime-minister-of-india-to-nepal/
37. साहू, अ. क. (2015). फ्चयूर ऑफ़ इंडिया- नेपाल रिलेशन: इज चाइना ए फैक्टर? *स्ट्रैटेजिक अनालिसिस, Vol. 39, No. 2,*, 197–204.
38. सिंह, अ. (2022, March 30). *Nepal-India Relations: Post the Rise of Modi*. Retrieved March 7, 2023, from AIDIA: https://www.aidiaasia.org/research-article/nepal-india-relations-post-the-rise-of-modi
39. सिंह, आ. (2020). *भारत-नेपाल संबंध: एक राजनीतिक अध्ययन.* दिल्ली: अंकित पब्लिकेशन.
40. *https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/India-Nepal_2022.pdf [accessed 04 February 2023].*
41. *Nepal - India, Nepal - China Relations: Documents 1947 - June 2005. Volume - I. (2005). India: Geetika.*
42. *https://youtu.be/GirykRbk-do (PM Modi attends Buddha Jayanti celebrations in Nepal)*
43. *https://thediplomat.com/2022/06/india-nepal-diplomatic-relations-at-75-full-of-contradictions/*